पारो की कहानी

लेखिका: सुग़रा मेहदी

चित्रांकन: सुव्रा घोश

सुग़रा मेहदी

आत्म सम्मान और साहस को औरत की ज़िन्दगी में महत्व देने वालीं सुग़रा मेहदी, आज की प्रमुख उर्दू लेखिकाओं में से हैं।

अपनी ख़ालाजान (मौसी) साहिबा आबिद हुसैन के प्रोत्साहन से 15 साल की उम्र से ही उन्होंने लिखना शुरू किया। उनका पहला उपन्यास, *पा बा जौलान*, 1973 में प्रकाशित हुआ। समाज की कुरीतियों में पलती और बढ़ती एक लड़की की कठिन परिस्थितियों ने उनको बहुत प्रभावित किया है। औरतों के लिए एक बेहतर ज़िन्दगी ही उनकी कहानियों का मूल है। उनकी रचनाएँ औरतों को रूढ़ीवादी समाज की बेड़ियाँ तोड़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

वह दिल्ली के ज़ामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में उर्दू साहित्य की प्रोफेसर रह चुकी हैं।

KATHA

पहला संस्करण 1994, दूसरा संस्करण 2004, तीसरा संस्करण 2009
चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © कथा, 1994
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-85586-17-5

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है, बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना।
ए-3 सर्वोदया एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग,
नई दिल्ली–110017
दूरभाष: 2652 4350, 2652 4511, फैक्स: 2651 4373
ई मेल: kathakaar@katha.org
इंटरनेट: http://www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

पारो की कहानी

(मूल उर्दू भाषा से अनूदित व रूपांतरित)

"पारबती, पारबती! पारो, पारो ..." बाबूजी उसे पुकारते। लेकिन वह तब तक जवाब न देती जब तक कि वे उसे बेटा न कहते।

माँ गुस्सा होतीं। "अरे! तुम इसका दिमाग खराब कर रहे हो। बेटा तो हमारे भाग्य में है नहीं। इसे भी दूसरे घर जाना है। अभी से दबकर नहीं रहेगी तो ससुराल में क्या होगा?"

पारो की चारों बहनें घर के काम करतीं और खाली वक्त में अपनी सहेलियों के साथ खुसुर-फुसुर करतीं।

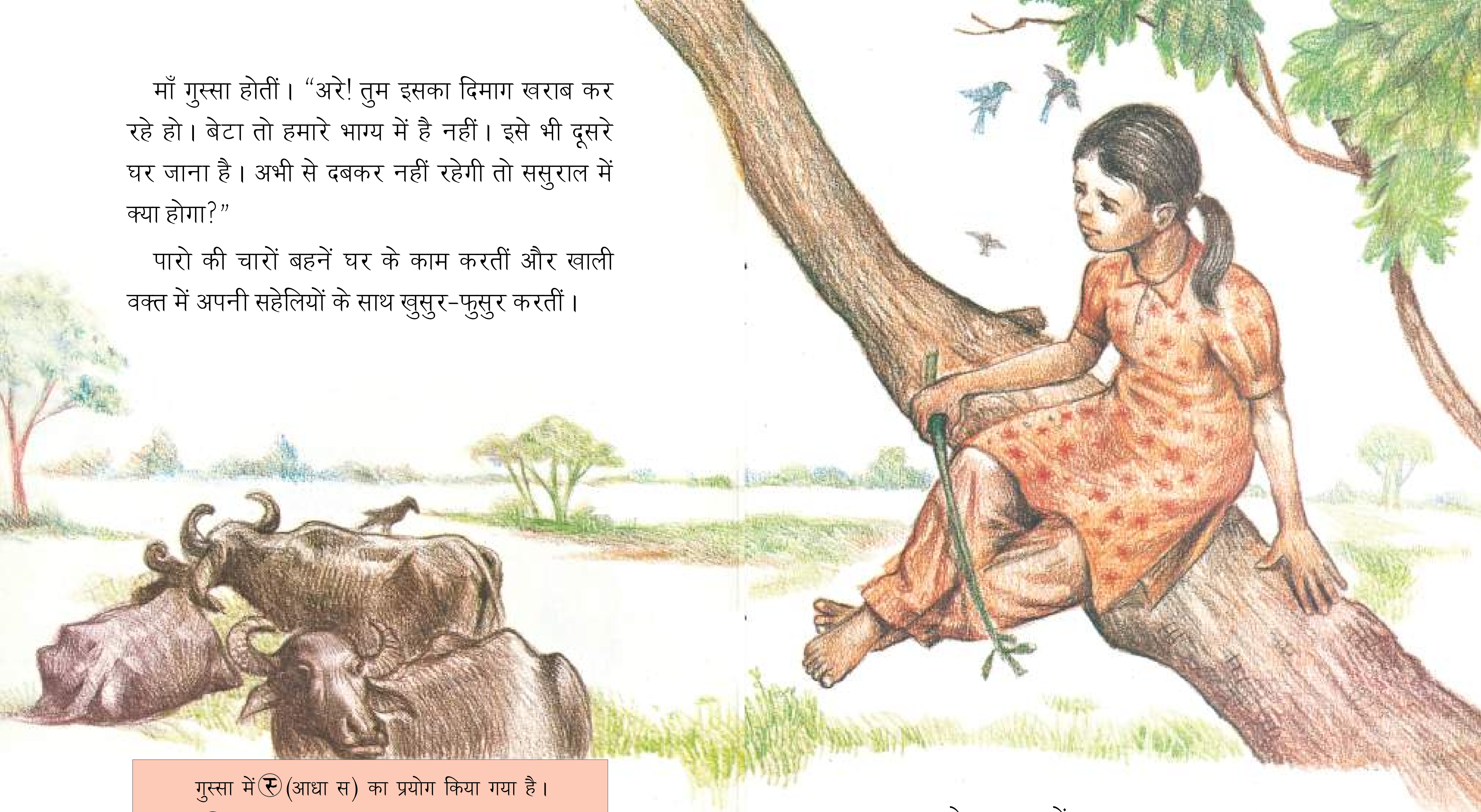

> गुस्सा में स्(आधा स) का प्रयोग किया गया है।
>
> स् का प्रयोग करने वाले कुछ और शब्द हैं:
>
> स्टेशन, अस्पताल, दस्तक, मुस्करायें

पर पारो का घर में मन न लगता। वह बाहर घूमा करती। बाबूजी के साथ खेतों पर जाती, भैंसे चराती।

एक-एक साल के अन्तर से बहनों की शादियाँ हो गईं। सारे घर का काम अब पारो के ऊपर आ गया। मगर घर में उसका दम घुटता था। वह रोटी पकाती तो जला देती, दाल कच्ची की कच्ची रहती। दोपहर को सबकी आँख बचाकर सड़क पर खूब तेज़ साइकिल दौड़ाती। माँ तो बुरा-भला कहती ही थीं, अब बाबूजी भी डाँटने लगे थे।

बहनें साल भर बाद ससुराल से आतीं, तो उनके पेट या गोद में बच्चा होता। सास-ननदों का रोना होता और घरवाले की शिकायतें होतीं।

इन शब्दों को लिखकर अभ्यास करें

आधा अक्षर	कहानी के शब्द	अन्य शब्द
ग	भाग्य	मग्न, योग्य
श	निश्चय	आश्चर्य, चश्मा
फ़	दफ़्तर	रफ़्तार, मुफ़्त
ध	ध्यान	मध्य, अध्यापक
त	खत्म	महत्व, यत्न
ज	ज़्यादा	इज्ज़त, छज्जा

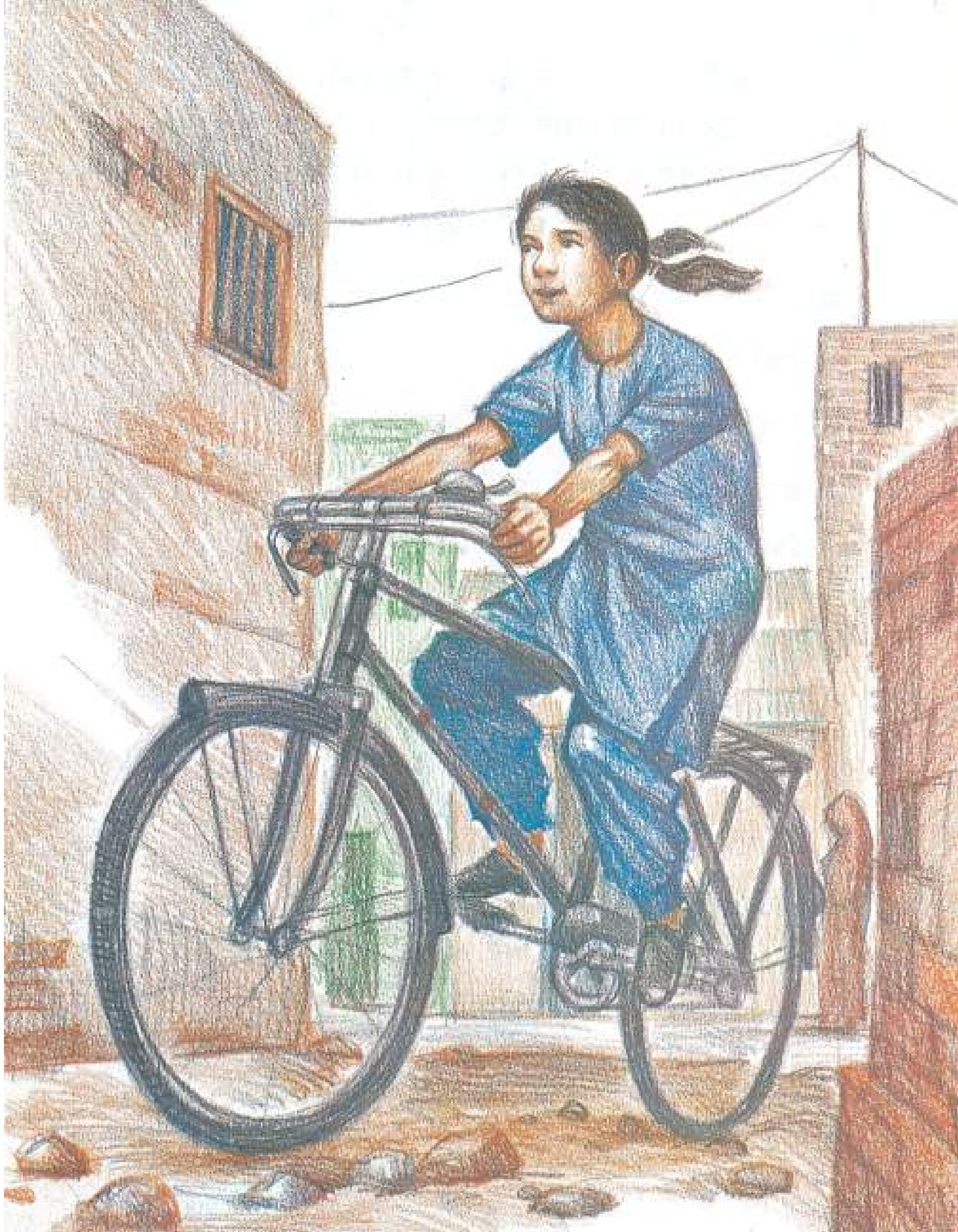

इस बार फसल काटने के बाद बाबूजी पारो के लिए लड़का ढूँढने निकले। पारो ने भगवान से प्रार्थना की, सवा रुपये की मन्नत भी माँगी की बाबूजी को लड़का न मिले। और बाबूजी को लड़का नहीं मिला।

मगर अब उसका क्या होगा! वह सोचती–

मैं रोटी क्यों पकाऊँ?

मैं शादी क्यों करूँ?

मैं आदमी की मार क्यों खाऊँ?

मैं बच्चे क्यों लटकाऊँ?

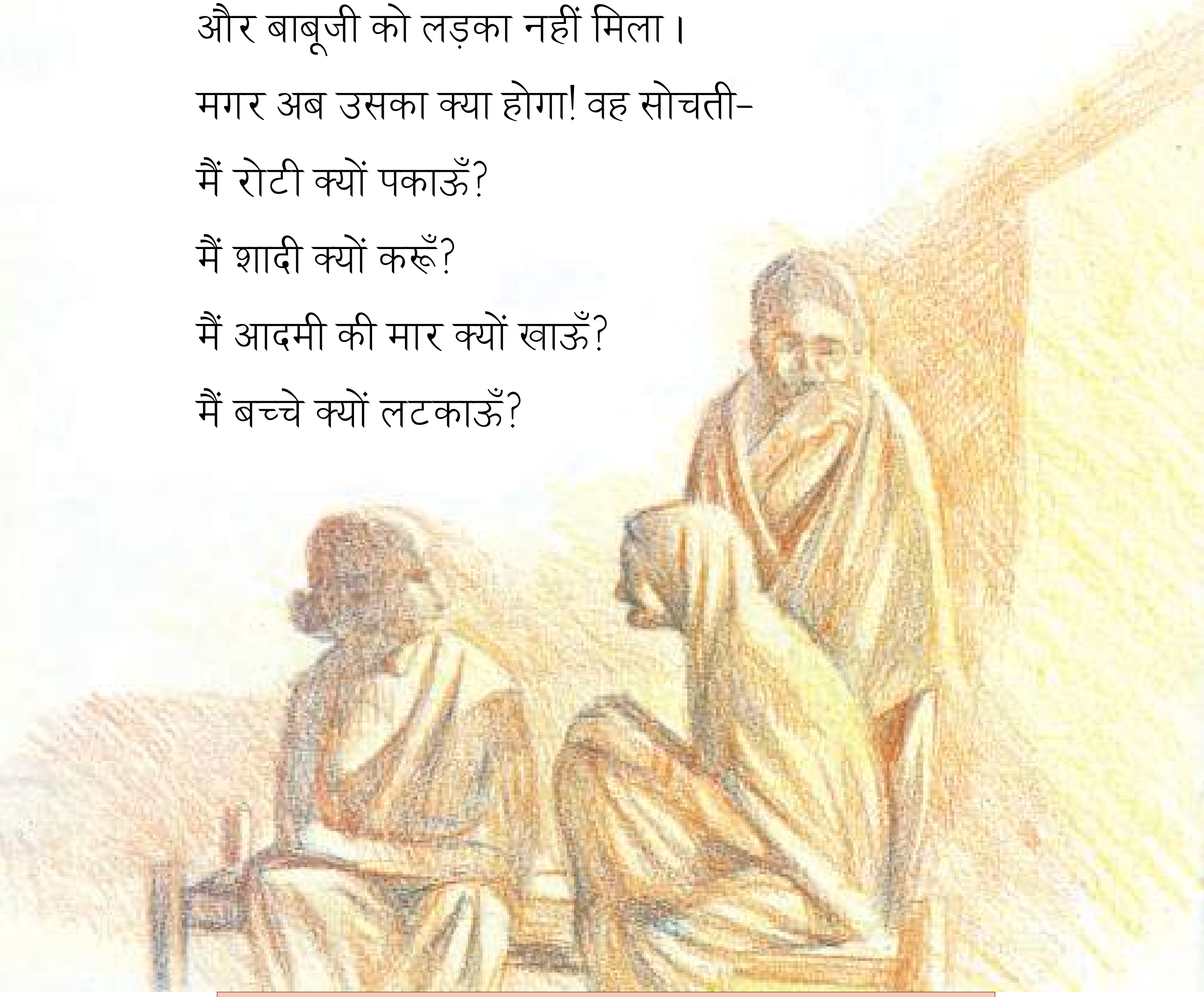

रिक्शा में क् (आधा क) का प्रयोग किया गया है।

क् का प्रयोग करने वाले कुछ और शब्द हैं:

मक्खी, चक्कर, धक्का, ढक्कन

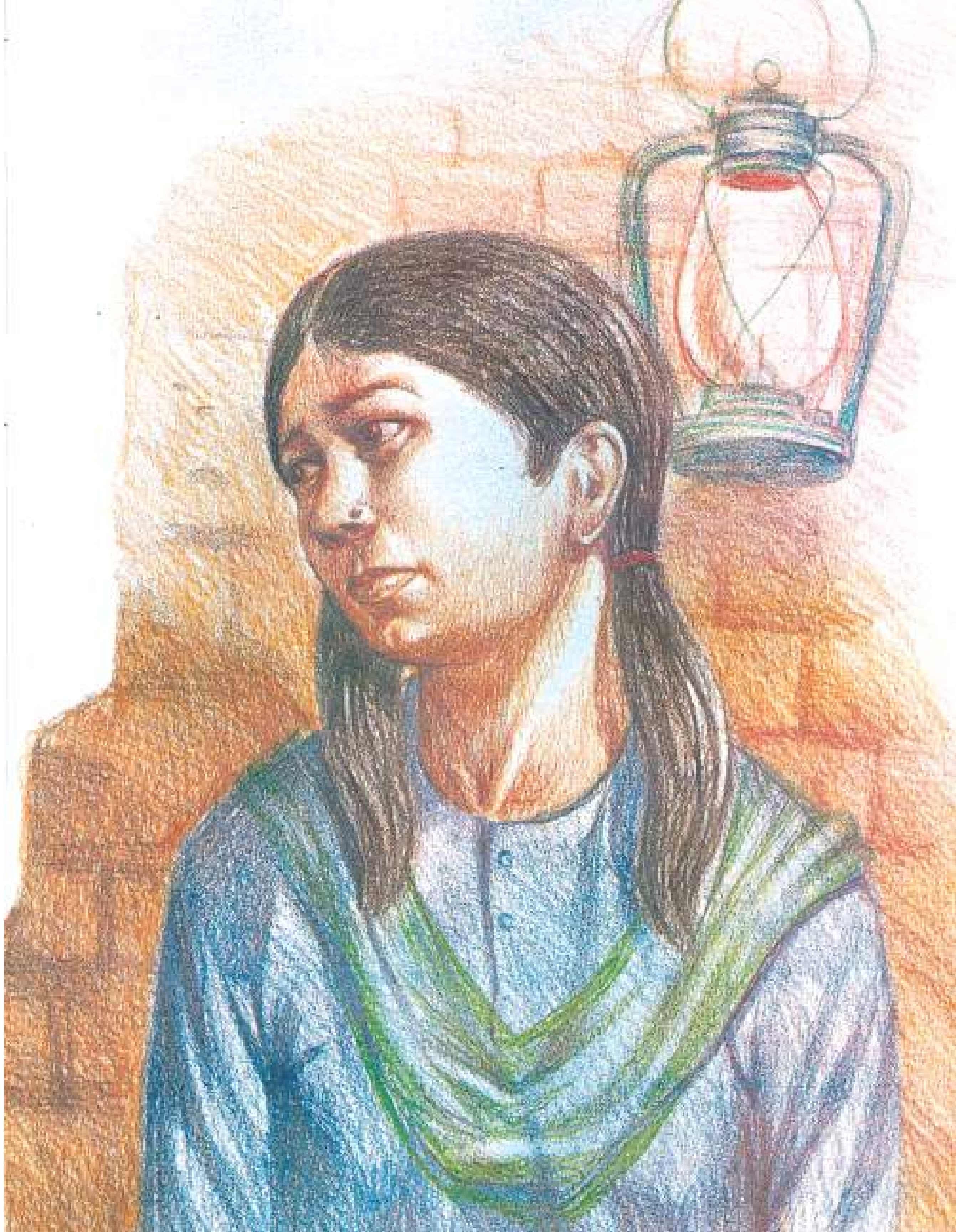

और एक दिन इसी "क्यों" की तकरार से घबराकर वह गाँव से भाग गई और जा पहुँची बनारस।

एक नए शहर में, अकेले खड़े उसके मन में बार-बार एक ही सवाल उठ रहा था - अब वह क्या करेगी? क्या वह भी घर-घर के बर्तन माँजकर और कपड़े सिलकर अपनी ज़िन्दगी की ज़रूरतों को पूरा करेगी?

नहीं! इन्हीं से भागकर तो वह इतनी दूर आई थी। उसे तो कुछ ऐसा करना था जिसे करने में उसे खुशी मिले।

तभी उसकी नज़र स्टेशन पर खड़े रिक्शावालों पर पड़ी। पारो ने निश्चय किया कि यही उसकी नई ज़िन्दगी की शुरूआत होगी।

अब तो पारो को बनारस में एक साल होने को जा रहा था। स्टेशन पर गाड़ी आकर खड़ी हुई। पारो ने अपनी टोपी ठीक की और पतलून के पाहिचे चढ़ाकर स्टेशन के दरवाज़े पर आ खड़ी हो गई। मुसाफ़िर निकल रहे थे। पारो की नज़र सवारी खोज रही थी। सामने से कोट-पतलून पहने एक नौजवान आ रहा था। हाथ में दफ़्तर की अटैची और साथ में सामान लिए कुली। पारो ने कुली को इशारा किया। सामान रखवाकर नौजवान को बैठने को कहा।

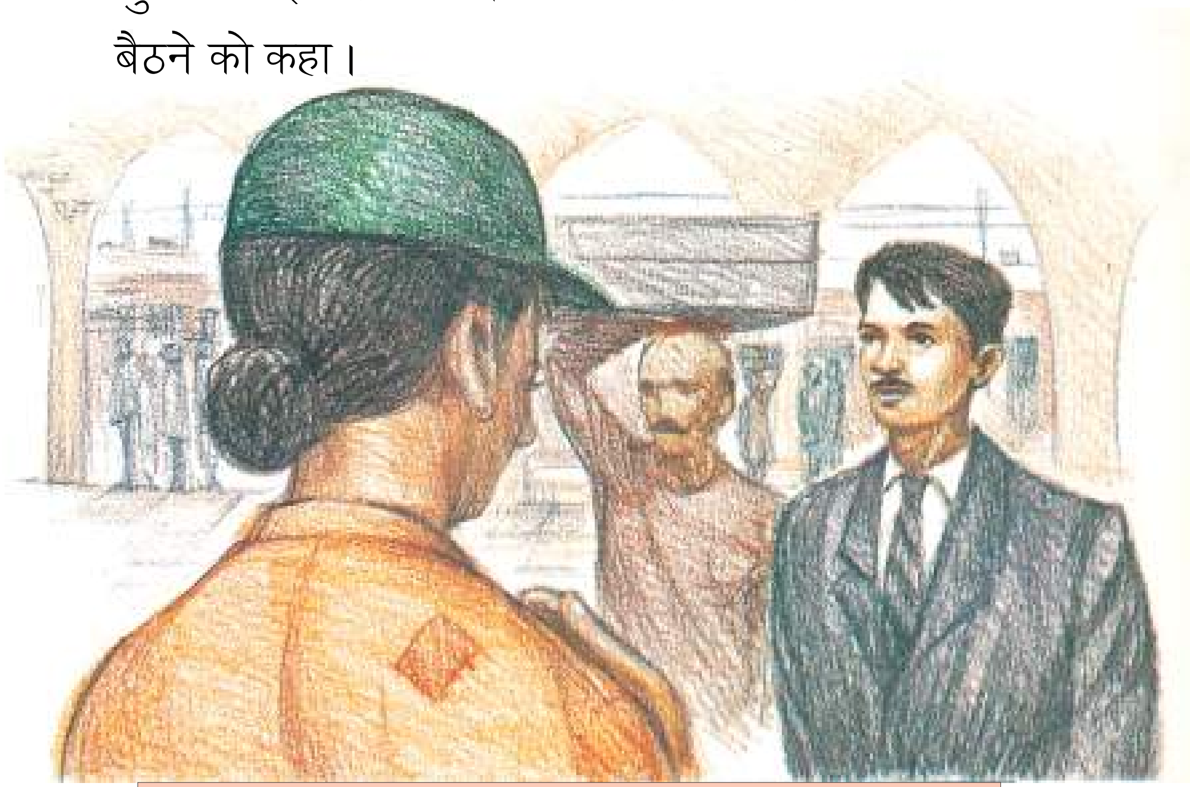

अन्दर में (न्) (आधा न) का प्रयोग किया गया है।
(न्) वाले कुछ और शब्द हैं:
अन्तर, मन्नत, ज़िन्दगी, बन्द

नौजवान ठिठका। फिर बोला, “गम्मू खाँ के चौराहे के क्या लोगे?”

“जितने आप दे देंगे।”

“अरे! तुम ... मेरा मतलब है ...” वह उसे ध्यान से देखने की कोशिश कर रहा था।

“बाबूजी, मेरा नाम पारो है।”

“पारो!”

“हाँ, बाबूजी, पारो। गम्मू खाँ के चौराहे के तीन रुपये लगेंगे।”

“ठीक है। मगर क्या नाम बताया तुमने – हाँ, पारो! पारो, तुम रिक्शा क्यों चलाती हो?”

“बाबूजी, आपको मेरे रिक्शा चलाने से कोई तकलीफ़ है?”

“नहीं, मगर ...”

गम्मू में (म्) (आधा म) का प्रयोग किया गया है।
(म्) का प्रयोग करने वाले कुछ और शब्द हैं:
तुम्हें, अम्मा, हिम्मत, लम्बा, सम्पादक, तुम्हारा

"अच्छा बाबूजी, यह बताओ, तुम क्या काम करते हो?"

"मैं? मैं बैंक में काम करता हूँ।"

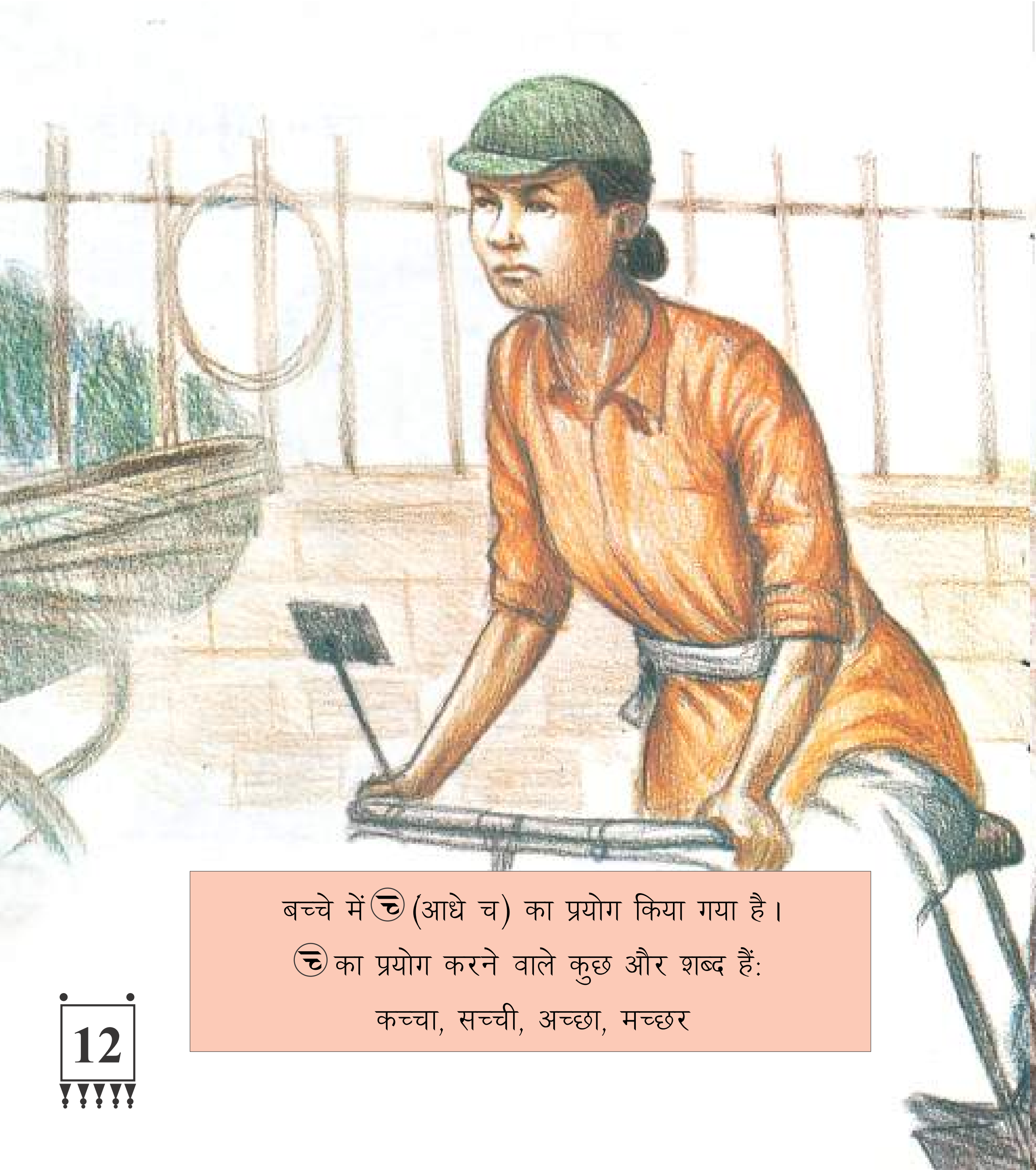

बच्चे में च् (आधे च) का प्रयोग किया गया है।
च् का प्रयोग करने वाले कुछ और शब्द हैं:
कच्चा, सच्ची, अच्छा, मच्छर

"मगर बाबूजी, तुम अस्पताल में काम क्यों नहीं करते?"

"मगर पारो बात यह है ..."

"देखो बाबूजी, सबका अपना-अपना काम होता है। अब चुपचाप बैठो।" फिर पारो का रिक्शा हवा से बातें करने लगा।

"लो, यह रहा गम्मू खाँ का चौराहा, पैसे निकालो।" और पैसे लेकर पारो वहाँ से चली गई।

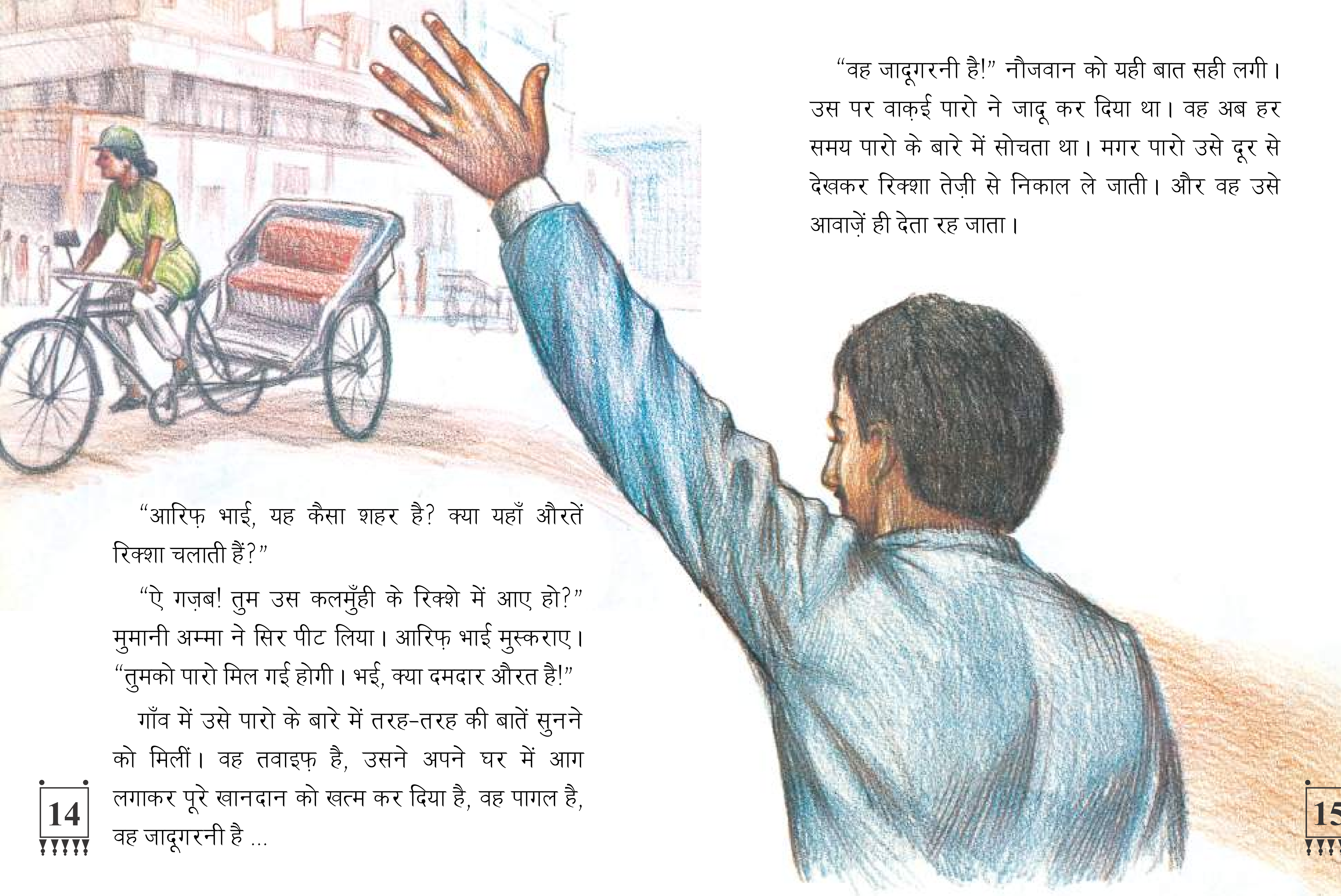

"आरिफ़ भाई, यह कैसा शहर है? क्या यहाँ औरतें रिक्शा चलाती हैं?"

"ऐ गज़ब! तुम उस कलमुँही के रिक्शे में आए हो?" मुमानी अम्मा ने सिर पीट लिया। आरिफ़ भाई मुस्कराए। "तुमको पारो मिल गई होगी। भई, क्या दमदार औरत है!"

गाँव में उसे पारो के बारे में तरह-तरह की बातें सुनने को मिलीं। वह तवाइफ़ है, उसने अपने घर में आग लगाकर पूरे खानदान को खत्म कर दिया है, वह पागल है, वह जादूगरनी है ...

"वह जादूगरनी है!" नौजवान को यही बात सही लगी। उस पर वाक़ई पारो ने जादू कर दिया था। वह अब हर समय पारो के बारे में सोचता था। मगर पारो उसे दूर से देखकर रिक्शा तेज़ी से निकाल ले जाती। और वह उसे आवाज़ें ही देता रह जाता।

आखिर एक दिन उसने पारो का ठिकाना ढूँढ ही लिया। वहाँ पहुँचा तो कोठरी अन्दर से बन्द थी। बाहर पारो का रिक्शा खड़ा था।

उस की समझ में नहीं आ रहा था कि वह पारो की कोठरी पर कैसे दस्तक दे। तभी बराबर की कोठरी से एक बड़ी-बड़ी मूँछों वाले, तहमद बाँधे पहलवान निकले।

“कहो मियाँ, क्या बात है?”

“जी, वह मुझे ... मेरा मतलब है, मुझे ... पारो से मिलना है,” वह घबरा रहा था।

“पारो से? मगर तुम्हें उससे क्या काम है?”

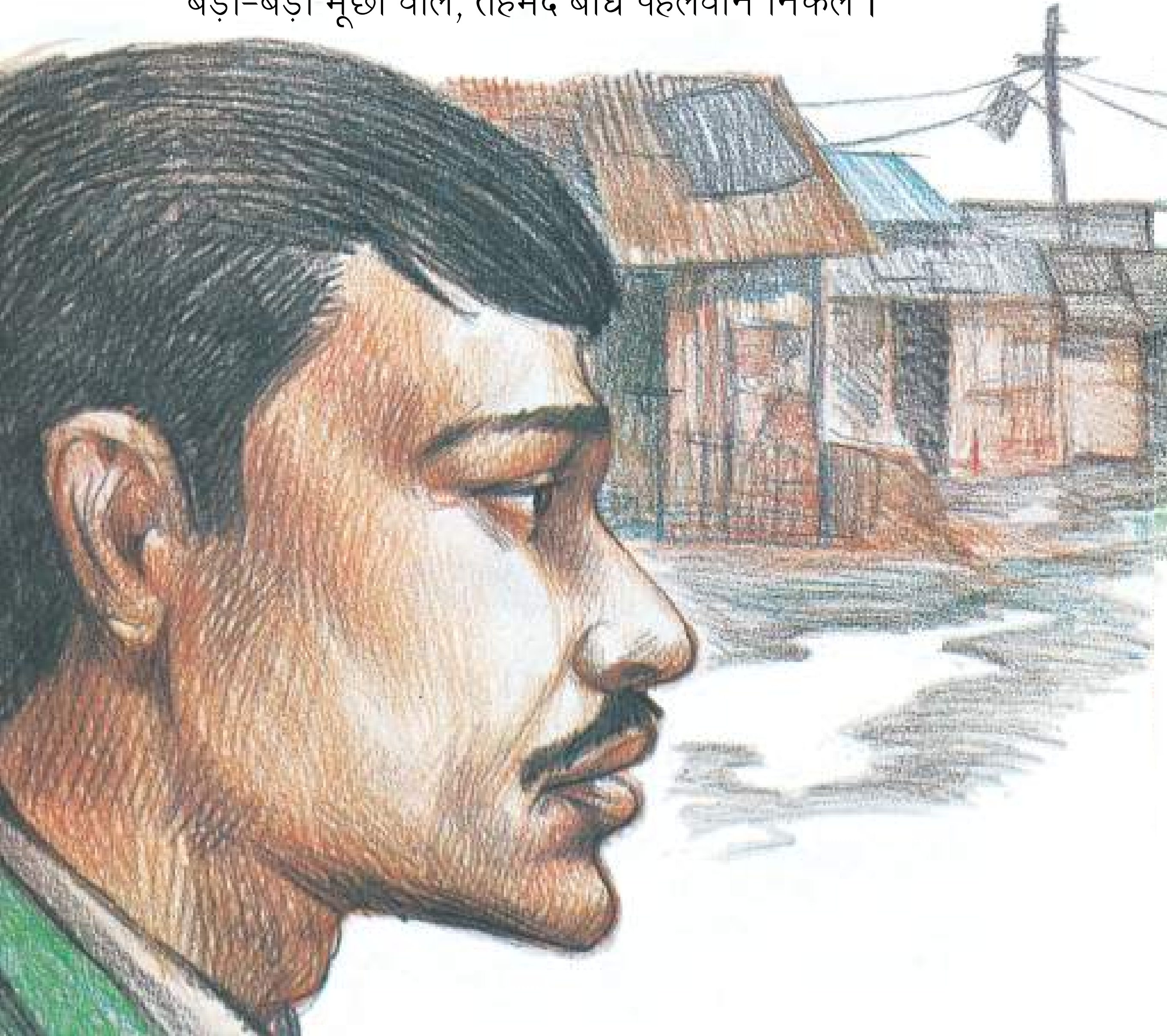

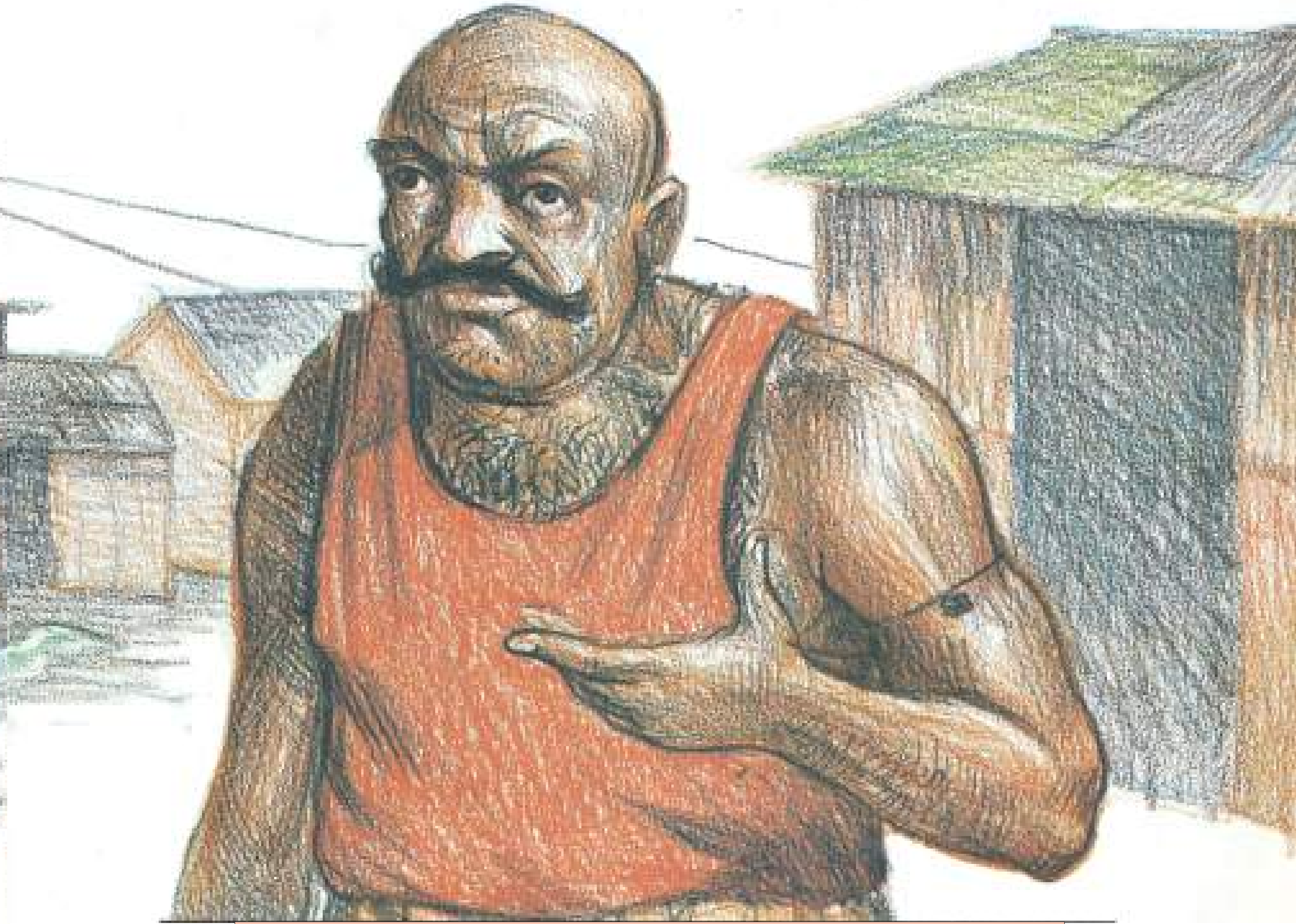

खाँ में ँ (चन्द्र बिंदु) का प्रयोग किया गया है।
ँ का प्रयोग करने वाले कुछ और शब्द हैं:
वहाँ, पहुँचा, ढूँढ, बाँधे

इससे पहले कि वह कुछ जवाब देता, पारो की कोठरी का दरवाज़ा एकदम से खुला।

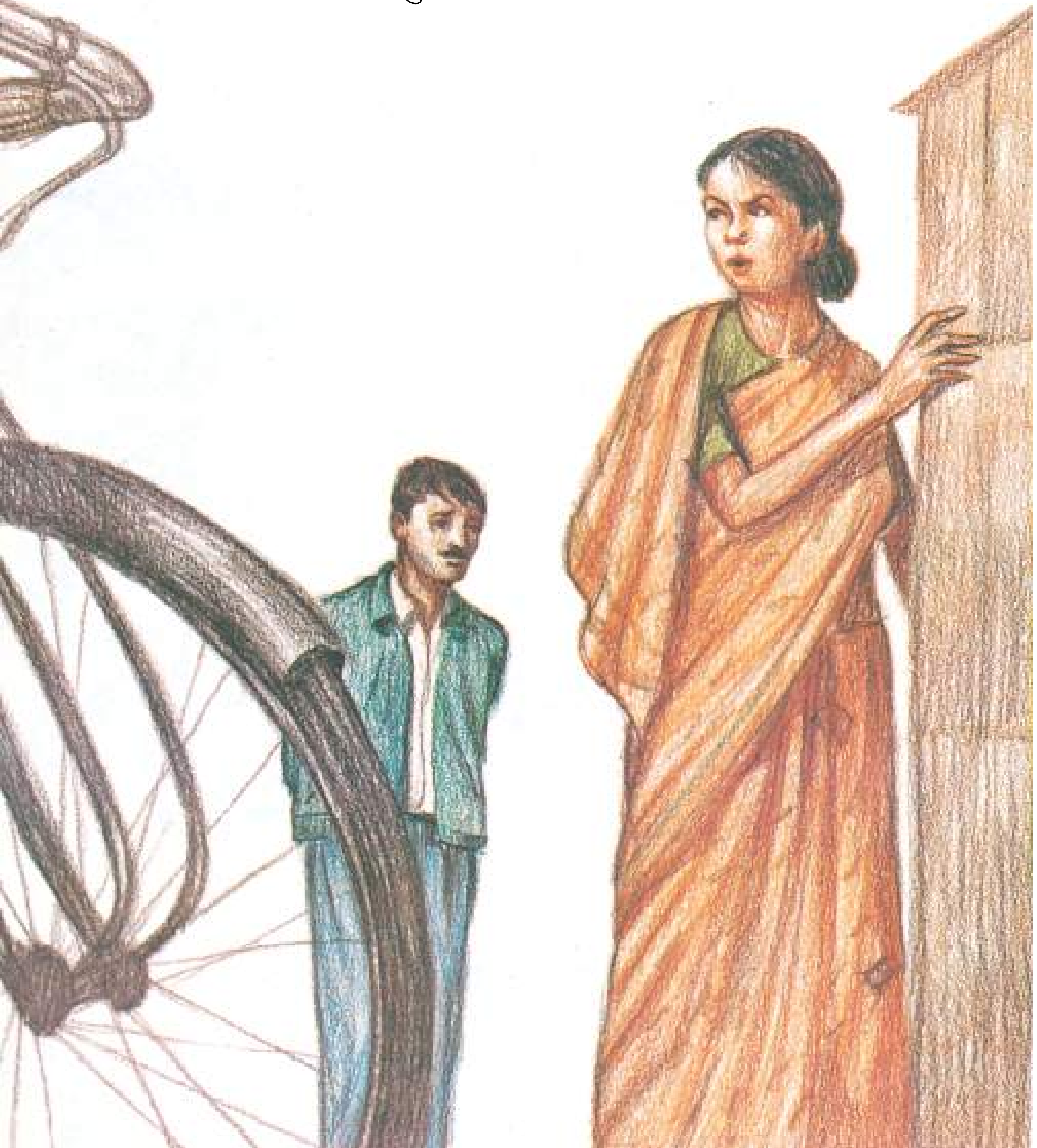

सामने पारो गुस्से में खड़ी कह रही थी, "इन्हें कुछ काम नहीं है। इनके पेट में दर्द हो रहा है कि पारो रिक्शा क्यों चलाती है!"

"नहीं, पारो! बिल्कुल नहीं, यह बात नहीं है। सुनो तो पारो।"

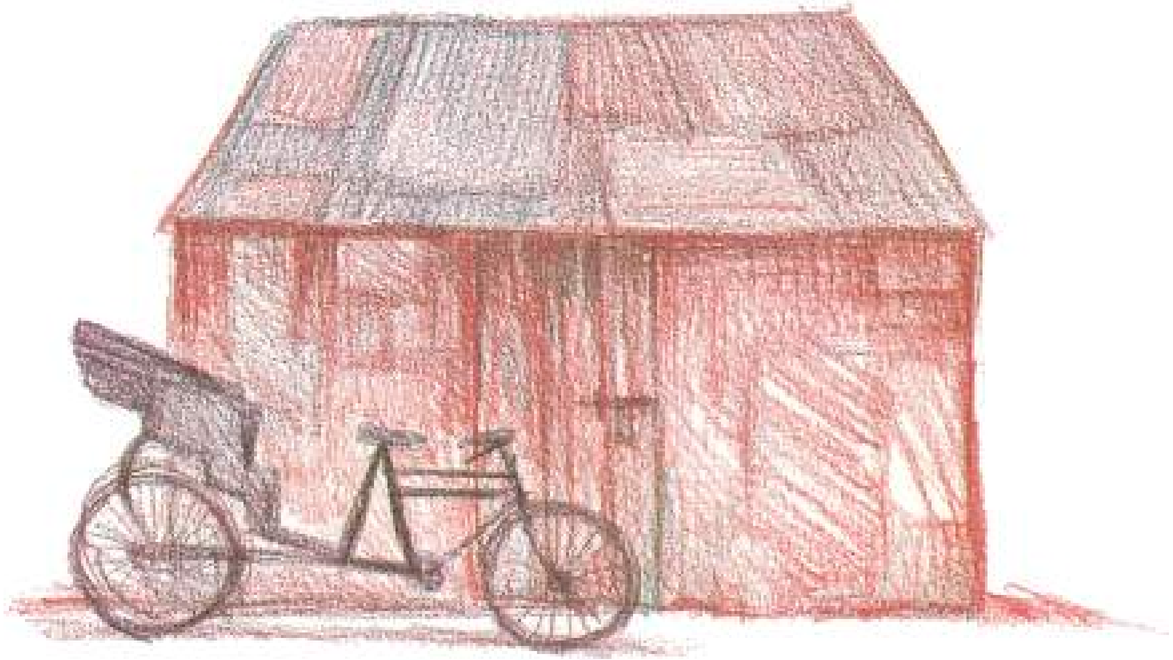

"बस, ज़्यादा पारो, पारो मत करो। कान खोलकर सुन लो कि मैं रिक्शा इसलिए चलाती हूँ क्योंकि मुझे रोटी पकाना अच्छा नहीं लगता। मुझे बर्तन धोना अच्छा नहीं लगता। मुझे मर्द की मार खाना अच्छा नहीं लगता। और पारो वही करती है जो उसे अच्छा लगता है। समझे?" और दरवाज़ा ज़ोर से बन्द हो गया।

शब्द बनायें

पारो	का	घर	
में	मन	न	लगता

ये **सात** शब्द *पारो की कहानी* में से लिए गये हैं।

इन शब्दों से हमें ये ग्यारह पद (मात्रा सहित अक्षर) मिले हैं।

का घ ग न पा म रो ल र ता में

अब इन ग्यारह पदों से हमने बारह शब्द बनाये हैं। इन शब्दों को देखने के लिए पृष्ठ को उल्टा करें।

अब देखें इन पदों से आप और कितने शब्द बना सकते हैं। ध्यान रहे मात्रा अक्षर से अलग न हो।

रोका काल पार काम
मन तार नल पाता
लगन कान मकान पान

अपनी शब्दावली बढ़ायें

दायें ओर दिए गये शब्दों में से एक शब्द बायें ओर दिए गये शब्द का अर्थ है। सही अर्थ बताएँ। (किताब पर चिन्ह न लगाएँ। एक अलग कागज़ पर अपने जवाब लिखें और खेल के अंत में अपने जवाब मिलाएँ। हर सही जवाब के लिए अपने को एक अंक दें।)

1.	सवाल	क	प्रश्न	5.	शादी	क	सगाई
		ख	उत्तर			ख	मन्नत
		ग	जवाब			ग	विवाह
2.	ज़िन्दगी	क	जीना	6.	दस्तक	क	खटखटाना
		ख	जीव			ख	दफ़्तर
		ग	जीवन			ग	देना
3.	खानदान	क	बहनें	7.	मर्द	क	जीव
		ख	परिवार			ख	नारी
		ग	दावत			ग	आदमी
4.	गुस्सा	क	डाँट	8.	मन्नत	क	मंत्र
		ख	प्रशंसा			ख	रुकावट
		ग	क्रोध			ग	दुआ

आपका स्कोर:

6 से 8 अंक - बहुत बढ़िया

4 से 6 अंक - बढ़िया

5 से कम - और पढ़ें व अभ्यास करें

सही जवाब:

1. क 2. ग 3. ख 4. ग 5. ग 6. क 7. ग 8. ग

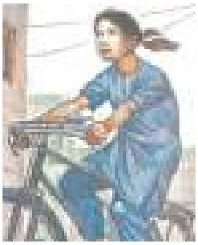

पारो का मन घर के कामों में नहीं लगता था। उसे अच्छा लगता था बाहर घूमना, खेतों पर जाना और खूब तेज़ साइकिल दौड़ाना !

एक बहादुर लड़की की कहानी, जिसे ज़िन्दगी में कुछ ऐसा करना था जिसमें उसे खुशी मिले !

सर्वश्रेष्ठ कथामाला भारत के महान लेखकों की एक शानदार कहानी श्रृंखला है। आइऐ अपने देश के साहित्य का खजाना खोजें, इन कहानियों और इनसे जुड़े खेलों और अभ्यासों के ज़रिये !

इस पुस्तक की कहानी उर्दू भाषा की प्रमुख लेखिका सुग़रा मेहदी ने लिखी है।